हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाकी दिशा

भूमिका

हिन्दू धर्म और भारतवर्षकी विशेषता यह है कि यहां भविष्यमें होनेवाली अद्वितीय घटनाएं होनेसे पहले ही लिख दी जाती हैं । वाल्मीकि ऋषिने अलौकिक प्रतिभादृष्टिके बलपर पहले रामायणकी रचना की । तदुपरांत प्रभु श्रीरामका अवतार हुआ और ऐतिहासिक 'रामराज्य' पृथ्वीपर अवतरित हुआ। भगवान श्रीकृष्णके जन्मसे पूर्व भी दैवी आकाशवाणी हुई थी । आगे आकाशवाणी सत्य सिद्ध हुई और ईश्वरने भगवान श्रीकृष्णके रूपमें अवतार लेकर धर्मकी संस्थापना की । जिससे पृथ्वीपर पुनः 'धर्मराज्य' स्थापित हुआ। अध्यात्मके अधिकारी व्यक्ति परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने सर्वप्रथम वर्ष १९९८ में अपनी दूरदृष्टिके आधारपर यह विचार प्रस्तुत किया था कि 'भारतमें वर्ष २०२३ से वर्ष २०२५ की अवधिमें 'ईश्वरीय राज्य' अर्थात 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित होगा।' तबसे वे निरन्तर 'हिन्दू राष्ट्र' विषयपर वैचारिक और आध्यात्मिक स्तरके लेख लिख रहे हैं । इन विचारोंमें आगामी कुछ वर्षोंमें स्थापित होनेवाले आदर्श राष्ट्ररचनाके, अर्थात धर्मसंस्थापनाके बीज हैं । हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनासे सम्बन्धित कोई भी आशादायी घटना स्थूलरूपमें होती दिखाई नहीं दे रही । ऐसेमें 'हिन्दू राष्ट्र'के विषयमें बोलना, किसी-किसी को अतिशयोक्ति लग सकती है; परन्तु कालके पदचाप पहले ही सुन लेनेवाले सन्तोंने, हिन्दू राष्ट्ररूपी उज्ज्वल भविष्य देख लिया है । उस दिशामें प्रयत्न करना, हमारी साधना है ।

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने समय-समय पर 'हिन्दू राष्ट्र' के विषयमें लिखे लेखोंमें जो विचार प्रस्तुत किए हैं, उनमेंसे केवल हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाको दिशा देनेवाले विचारोंका ही इस ग्रन्थमें समावेश किया गया है । यह ग्रन्थ परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके विचारोंका संग्रह है, जिसमें उनके त्वरित और विषयबद्ध दोनों प्रकारके लेख हैं । 'हिन्दू राष्ट्र' शब्दकी व्याख्या अनेक विचारवेत्ताओंने भूगोल, इतिहास, संस्कृति तथा दर्शन के आधारपर की है । परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने 'हिन्दू राष्ट्र' विषयको आध्यात्मिक दृष्टिसे प्रस्तुत किया है । यह ग्रन्थ पढनेपर सहज ही ध्यानमें आएगा कि विश्वकल्याणकी व्यापक आध्यात्मिक शिक्षा देनेवाले भारत

सहित सम्पूर्ण पृथ्वीपर 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित करना, एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है ।

वीर सावरकर, प्रथम सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार, पूज्य गोळवलकर गुरुजी आदि महान पुरुषोंने भी हिन्दू राष्ट्रका विचार प्रखरतासे समाजके सामने रखा । दुर्भाग्यसे स्वयम्भू भारतवर्ष, स्वाधीनताके पश्चात 'धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र' बन गया । जिससे 'हिन्दू राष्ट्र' नामक तेजस्वी संकल्पना छिप गई । जहां 'रामराज्य' प्रत्यक्ष अवतरित हुआ था, वहीं आज इसे दन्तकथा कहा जा रहा है । छत्रपति शिवाजी महाराजद्वारा स्थापित 'हिन्दवी स्वराज्य' को अर्थात 'हिन्दू राष्ट्र'को लोगोंकी स्मृतिसे हटाया जा रहा है और 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' के नामपर उसे 'हरा रंग' देनेका प्रयास किया जा रहा है । इतना ही नहीं, जानबूझकर दुष्प्रचार किया जा रहा है कि हिन्दू राष्ट्र 'धर्मान्धता' है। इस धर्मनिरपेक्षताके कारण देशके सामने असंख्य समस्याएं उत्पन्न हुई हैं और हो रही हैं; तब भी धर्मनिरपेक्षताके प्रति अंधविश्वास रखनेवाले लोगोंकी इच्छा है कि भारत 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' ही बना रहे । इनके लिए 'हिन्दू राष्ट्र' का विषय ही निरर्थक है । उन्हें पता ही नहीं है कि प्रश्न 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' अथवा 'हिन्दू राज्य' ऐसा नहीं; अपितु आगामी कुछ वर्षोंमें उत्पन्न होनेवाला 'इस्लामी राज्य' अथवा 'हिन्दू राज्य', यह वास्तविक प्रश्न है । इस स्थितिमें केवल हिन्दू-संगठन करनेवाली विचारधारा ही इस देशकी रक्षा एवं हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना कर सकती है । हिन्दू राष्ट्रकी आकांक्षा पूरी होनेके लिए हिन्दू समाजके हिन्दू राष्ट्र-सम्बन्धी विचार, उच्चार और आचार एक होने चाहिए । इसीलिए 'हिन्दू समाजके विविध घटक, उदाहरणके लिए हिन्दू संगठन, सम्प्रदाय, सन्त, अधिवक्ता, विचारक आदि को 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापनाके लिए क्या करना चाहिए', इसका मार्गदर्शन इस ग्रन्थमें किया गया है ।

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके प्रेरणादायी विचारोंसे स्फूर्ति लेकर हम आगामी कालमें हिन्दू समाजको रामराज्यकी अनुभूति प्रदान करनेवाला 'हिन्दू राष्ट्र' भारतभूमिमें स्थापित कर पाएं, इसमें गिलहरी समान अल्प

नहीं; अपितु हनुमानजी समान अधिकतम योगदान देनेकी प्रेरणा हममें उत्पन्न हो और इसके आधारपर यह महान कार्य करनेके लिए हम शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक स्तरपर अथक परिश्रम कर पाएं, यह प्रभु श्रीरामके चरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनकी समर्थक भूमिका !

हिन्दी भाषामें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ । इससे उसकी सात्त्विकता घट जाती है । संस्कृत भाषा देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्ह जोडती है । वर्तमान कालका उदाहरण लें, तो अंग्रेजी भाषामें भी बिन्दुका प्रयोग नहीं किया जाता; तथापि पूरे संसारमें इस भाषाके प्रयोगमें कोई बाधा नहीं आती ।

''कारकचिन्हको धातुसे जोडना ही उचित है ! संस्कृतमें 'रामस्य धनुष्यः' लिखते हैं । इसलिए 'रामका धनुष' ही उचित है । 'राम का धनुष' लिखनेका अर्थ है, रामको धनुषसे अलग करना ! रामका धनुष उनके साथ ही होना चाहिए !''

– डॉ. लालचंद तिवारी, एक प्रमुख अधिकारी, 'गीता प्रेस' गोरखपुर

संस्कृत भाषासमान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्तिको इसका आचरण कर 'स्व-भाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाना चाहिए !

– (परात्पर गुरु) डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

'सनातन संस्थाके संस्थापक सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीके विचार ब्राह्मतेज एवं क्षात्रतेज को वृद्धिंगत करते हैं !' – **श्रीमद् जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्रीमद् गंगाधरेंद्र सरस्वती महास्वामी, स्वर्णवल्ली मठ, कर्नाटक.**

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।)

अध्याय १ : 'हिन्दू राष्ट्र' : मूलभूत विचार ११

अध्याय २ : हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी दृष्टिसे साधनाका महत्त्व २०

* धर्माचरणी हिन्दू ही 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित कर सकते हैं ! २०

अध्याय ३ : हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनामें ब्राह्मतेजका महत्त्व ३१

अध्याय ४ : हिन्दू राष्ट्रके निर्माणमें सूक्ष्म स्तरीय 'देवासुर संग्राम' ! ३६

अध्याय ५ : हिन्दू राष्ट्र-स्थापना हेतु साम्प्रदायिक एकता चाहिए ! ४३

* सभी सम्प्रदायोंके निःस्वार्थी और अहंकाररहित अनुयायियों द्वारा हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना सम्भव ! ४३

अध्याय ६ : हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनोंके हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु मिलकर कार्य करनेकी दिशा ! ४५

* उग्र और सौम्य विचारके संगठन परस्पर पूरक कार्य करें ! ४८

अध्याय ७ : हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनामें विचारकोंका महत्त्व ४९

अध्याय ८ : हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाका प्रत्यक्ष कार्य ५३

अध्याय ९ : हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके भविष्यकालीन कार्यकी दिशा ६३

अध्याय १० : हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके कार्यमें सम्मिलित हों ! ६७

* 'भारतमें हिन्दू राष्ट्र स्थापित करना' पहला चरण तथा 'पूरे विश्वमें हिन्दू धर्मका प्रसार करना' अन्तिम चरण ! ६९